

1. परिचय

बी0टी0सी0 (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) रूपरेखा

वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, बाल-मनोविज्ञान तथा बच्चों के सीखने-लिखने की प्रक्रिया एवं बालगत मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भिक शिक्षा के शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु नवीन शिक्षण-विधियों, तकनीकों, शैक्षिक-नवाचारों एवं समसामयिक विषयवस्तु को द्विवर्षीय बी0टी0सी0 पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

बी0टी0सी0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ष में दो सेमेस्टर तथा द्वितीय वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर 6 माह (न्यूनतम 120 शैक्षिक दिवस एवं 10 परीक्षा दिवसों) का होगा।

सेमेस्टरवार विषय विभाजन सारिणी : प्रत्येक सेमेस्टर के अन्तर्गत दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र व विभिन्न विषयगत प्रश्नपत्र एवं एक माह का इण्टर्नशिप समाहित किया गया है। जिनका विवरण निम्नवत् है:-

| प्रथम सेमेस्टर | द्वितीय सेमेस्टर | तृतीय सेमेस्टर | चतुर्थ सेमेस्टर |
|---|---|---|--|
| सैद्धान्तिक विषय | | | |
| बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया(edu 01) | वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा (edu 03) | शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार (edu 05) | आरम्भिक स्तर पर भाषा के पठन/लेखन एवं गणितीय क्षमता का विकास (edu 07) |
| शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त (edu 02) | प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास (edu 04) | समावेशी शिक्षा (edu 06) | शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन (edu 08) |
| सामान्य विषय | | | |
| विज्ञान | विज्ञान | विज्ञान | विज्ञान |
| गणित | गणित | गणित | गणित |
| सामाजिक अध्ययन | सामाजिक अध्ययन | सामाजिक अध्ययन | सामाजिक अध्ययन |
| हिन्दी | हिन्दी | हिन्दी | हिन्दी |
| संस्कृत/उर्दू | अंग्रेजी | संस्कृत/उर्दू | अंग्रेजी |
| कम्प्यूटर शिक्षा | समाजोपयोगी उत्पादक कार्य | कम्प्यूटर शिक्षा | शांति शिक्षा एवं सतत विकास |
| कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) | कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) | कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) | कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) |
| इण्टर्नशिप | इण्टर्नशिप | इण्टर्नशिप | इण्टर्नशिप |

कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य में से किसी एक विषय का चयन प्रशिक्षु द्वारा प्रत्येक सेमेस्टर में किया जाएगा, जिसका मूल्यांकन विषयाध्यापक द्वारा ही किया जाएगा, इसी प्रकार समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (एस0यू0पी0डब्लू0) विषय का भी मूल्यांकन मात्र विषय अध्यापक द्वारा ही किया जाएगा। इन विषयों की लिखित/वाह्य परीक्षा नहीं होगी।

बी0टी0सी0 द्विवर्षीय प्रशिक्षण हेतु पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों की योजना

प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में संज्ञानात्मक पक्ष के साथ-साथ संज्ञान सहगामी पक्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ्यक्रम में निहित विषयों के द्वारा जहाँ ज्ञानात्मक योग्यता का विकास होता है वहीं पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों के द्वारा उनके शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक तथा कौशलात्मक पक्ष का विकास होता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए बी0टी0सी0 प्रशिक्षण में भी इन क्रियाकलापों को समाविष्ट करने की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक प्रशिक्षु इनमें भाग लेकर इन गतिविधियों में कुशलता प्राप्त करके विद्यालयों में प्रभावी व नियोजित तरीके से इनका आयोजन करा सके व बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दे सकें।

प्रशिक्षण की सम्पूर्ण अवधि में प्रत्येक सेमेस्टर में निम्नलिखित पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों का आयोजन नियमित रूप से समय-समय पर अनिवार्य रूप से कराया जाए—

1. राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पर्वों/दिवसों का आयोजन

- ❖ गणतंत्र दिवस— 26 जनवरी, स्वतंत्रता दिवस— 15 अगस्त, गाँधी जयन्ती— 2 अक्टूबर
- ❖ विश्व पर्यावरण दिवस— 5 जून, शिक्षक दिवस— 5 सितम्बर, मानवाधिकार दिवस— 10 दिसम्बर

2. खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन— राज्य स्तर, मण्डल स्तर तथा जनपद स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिताओं का तथा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संध्या का आयोजन।

- ❖ कबड्डी, खो-खो, बैडमिण्टन, बॉलीवाल, कैरम, शतरंज
- ❖ विभिन्न प्रकार की दौड़, लम्बी कूद
- ❖ भाला फेंक, चक्का फेंक, गोला फेंक

3. साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- ❖ निबन्ध लेखन, सुलेख, प्रश्नमंच, वर्तमान के शैक्षिक मुद्दों/समस्या परिचर्चा/वाद-विवाद
- ❖ आशुभाषण/आशुलेखन
- ❖ काव्यगोष्ठी
- ❖ अन्त्याक्षरी (कविता, दोहे, चौपाई, छन्द आदि पर) आधारित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
- ❖ कविता/कहानी लेखन (स्वरचित), स्लोगन लेखन

4. सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- ❖ गायन प्रतियोगिता—देशगीत, समूह गीत, भजन, लोकगीत, क्षेत्रीय भाषाओं के गीत, गज़ल, कव्वाली।
- ❖ नृत्य प्रतियोगिता—एकल नृत्य, समूह नृत्य
- ❖ वादन प्रतियोगिता—तबला, बांसुरी, सितार, गिटार, ढोलक
- ❖ अभिनय प्रतियोगिता—नाटक, एकांकी, मूक अभिनय

5. कलात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- ❖ मेंहदी प्रतियोगिता, पुष्प सज्जा, रंगोली एवं अल्पना प्रतियोगिता।
- ❖ पेन्टिंग, पोस्टर/कोलाज निर्माण, आडियो/वीडियो विलप।

- ❖ अनुपयोगी वस्तुओं से कलात्मक व उपयोगी वस्तुओं का निर्माण।
 - ❖ कढ़ाई/बुनाई प्रतियोगिता, कलमदान, फूलदान, फोटोफ्रेम बनाना व साज-सज्जा।
 - ❖ मिट्टी/पीओपी के खिलौने का निर्माण।
6. संस्थान परिसर, प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में वृक्षारोपण तथा परिसर का सुन्दरीकरण।
 7. टीएलएम मेले का आयोजन/विज्ञान-क्लब/पर्यावरण क्लब निर्माण व विज्ञान मेले का आयोजन।
 8. आईसीटी आधारित कक्षा-शिक्षण प्रतियोगिता।
 8. स्काउट/गाइड शिविर का आयोजन।
 9. शैक्षिक भ्रमण का आयोजन।

चतुर्थ सेमेस्टर

| क्रम संख्या | विषय | दिनों की संख्या | कालांश (न्यूनतम) | समूह चर्चा/प्रोजेक्ट कालांश (न्यूनतम) |
|-------------|---|-----------------|------------------|---------------------------------------|
| 1 | विज्ञान | — | 50 | 30 |
| 2 | गणित | — | 50 | 30 |
| 3 | सामाजिक अध्ययन | — | 75 | 30 |
| 4 | हिन्दी | — | 45 | 15 |
| 5 | अंग्रेजी | — | 60 | 30 |
| 6 | शांति शिक्षा एवं सतत् विकास | — | 45 | 15 |
| 7 | शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य/कला एवं संगीत | — | 15 | — |
| 8 | आरम्भिक स्तर पर भाषा के पठन/लेखन एवं गणितीय क्षमता का विकास | — | 75 | 15 |
| 9 | शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन | — | 75 | 15 |
| 10 | कक्षा शिक्षण/इन्टर्नशिप | 30 | — | — |
| 11 | परीक्षा | 10 | | |
| | | | योग-490 | योग-210 |

आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन-लेखन तथा संख्यापूर्व क्षमताओं का विकास

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को भाषागत दक्षताओं सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना आदि का विकास करने हेतु तैयार करना।
- ध्वनियों के पारस्परिक अन्तर को समझने एवं शुद्ध उच्चारण कराने की क्षमता का विकास करना।
- भावाभिव्यक्ति की क्षमता के विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों को कराने की दक्षता का विकास करना।
- प्रशिक्षुओं को परस्पर संवाद, सरल वाक्य रचना करने की क्षमता का विकास करने हेतु गतिविधियों के आयोजन में दक्ष करना।
- प्रशिक्षुओं को गणित में संख्यापूर्व अभ्यासों के चयन एवं प्रयोग में दक्ष करना।
- प्रशिक्षु को भाषा एवं गणित विषय में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कराने में प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सैद्धान्तिक विषय—edu 07

**आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन—लेखन तथा संख्यापूर्व
सम्बोधों/क्षमताओं का विकास**

कक्षा शिक्षण: विषयवस्तु

- पठन एवं लेखन का अर्थ एवं महत्व।
- उद्देश्य।
- उपयोगिता।
- वर्ण, शब्द, वाक्य।
- ध्वनि का अध्ययन।
- स्वरों, व्यंजनों तथा व्यंजन समूहों को सुनकर समझना।
- दिये गये निर्देश, सन्देश, सुनाये गये वर्णन, कविता, कहानियों, लोकगीतों आदि में निहित भावों तथा विचारों को सुनकर समझना।
- हिन्दी/अंग्रेजी की सभी ध्वनियों, स्वरों, व्यंजनों का शुद्ध उच्चारण।
- लिपि की सभी ध्वनियों के लिपि संकेतों को पहचानकर शुद्ध रूप में पढ़ना।
- पूर्णविराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक तथा विस्मय सूचक चिह्नों को पहचानते हुए एवं विषयवस्तु को अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना।
- विलोम, समानार्थी, तुकान्त, अतुकान्त तथा समान ध्वनियों वाले शब्दों को पहचानना एवं पढ़ना।
- लिपि संकेतों, स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, संयुक्त वर्णों को सुडौल तथा आकर्षक रूप में लिखना।
- अनुनासिक ध्वनियों के लिपि संकेतों को शुद्धता के साथ लिखना।
- संख्यापूर्व तैयारी एवं सम्बोध।
- 1 से 9 तक की संख्याओं को वस्तुचित्रों की सहायता से गिनना, पढ़ना, लिखना।
- संख्याओं को क्रमबद्ध करना।
- गणितीय संक्रियायें—जोड़ना, घटाना एवं शून्य का ज्ञान।
- इकाई, दहाई तथा सैकड़े का ज्ञान।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन—लेखन क्षमता का विकास के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विभिन्न प्रकार के फन—गेम्स तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के शैक्षिक खेल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के वर्ण/शब्द के खेल तैयार करना।
- गणित पर आधारित सरल खेल तैयार करना।
- विभिन्न खेलों पर नाटक तैयार करना।
- तेजी से पढ़ने/लिखने के लिए गतिविधियाँ तैयार करना।

शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

उद्देश्य

- विद्यालय प्रबन्धन का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व की जानकारी देना।
- विद्यालय प्रबन्धन के सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- विद्यालय प्रबन्धन में विभिन्न अभिकर्मियों की भूमिका से अवगत कराना।
- विद्यालयीय व्यवस्था को प्रभावी बनाने का कौशल प्राप्त करने में सक्षम बनाना।
- विद्यालय प्रबन्धन के क्षेत्र जैसे—भौतिक, मानवीय, वित्तीय, शैक्षणिक, समय—सूचनाओं एवं अभिलेखों का प्रबन्धन आदि की जानकारी देना।
- विद्यालयीय क्रियाकलापों के सफलतापूर्वक सम्पादन में प्रशिक्षित करना।
- बेसिक शिक्षा अधिनियम 1972, बेसिक शिक्षा नियमावली एवं टी0ई0टी0 नियमावली की जानकारी देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया / विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग—विधि सीख सकें।

सैद्धान्तिक विषय—edu 08

शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

कक्षा शिक्षण: विषयवस्तु

(अ) शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

- संस्थागत नियोजन एवं प्रबन्धन का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व।
- विद्यालय प्रबन्धन का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व।
- विद्यालय प्रबन्धन के क्षेत्र—
- भौतिक संसाधनों का प्रबन्धन (विद्यालय भवन, फर्नीचर, शैक्षिक उपकरण, साज—सज्जा, पेयजल, शौचालय)।
- मानवीय संसाधनों का प्रबंधन
 - शिक्षक
 - बच्चे
 - समुदाय (ग्राम शिक्षा समिति, विद्यालय प्रबंधन समिति, शिक्षक अभिभावक संघ, मातृशिक्षक संघ, महिला प्रेरक दल)
- वित्तीय प्रबन्धन (विद्यालय अनुदान, टी0एल0एम0 ग्रांट, विद्यालय को समुदाय से प्राप्त धन, विद्यालय की सम्पत्ति से अर्जित धन, ग्राम पंचायत निधि से/जनप्रतिनिधियों से प्राप्त अनुदान)।
- शैक्षिक प्रबन्धन (कक्षा—कक्ष प्रबन्धन, शिक्षण अधिगम सामग्री प्रबन्धन, लर्निंग कार्नर एवं पुस्तकालय प्रबन्धन, पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तिकाएँ, शिक्षक संदर्षिकाएँ, शब्दकोष का प्रयोग एवं प्रबन्धन)।
- समय प्रबन्धन (समय सारिणी का निर्माण व प्रयोग)।
 - एक या दो अध्यापकों वाले विद्यालयों हेतु समय—सारिणी।
 - तीन या चार अध्यापकों वाले विद्यालयों हेतु समय—सारिणी।
 - पाँच अध्यापक वाले विद्यालय हेतु समय सारिणी।
- पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों का प्रबंधन— खेलकूद, शैक्षिक कार्यक्रम (वाद—विवाद, निबन्ध आदि), सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय पर्व, शैक्षिक भ्रमण, बागवानी, सत्रांत समारोह)।
- सूचनाओं एवं अभिलेखों का प्रबन्धन (विद्यालयीय सूचनाओं का संकलन, विप्लेषण एवं अभिलेखीकरण)।
- विद्यालय अभिलेख के प्रकार—

| अध्यापक उपस्थिति पंजिका | छात्र उपस्थिति पंजिका | पत्र व्यवहार पंजिका | एस0एम0सी0 पंजिका | एस0एम0सी0 आय—व्यय पंजिका | ग्राम शिक्षा निधि (आय—व्यय) पंजिका |
|----------------------------------|----------------------------------|---------------------------|-----------------------------|--|--|
| ग्राम शिक्षा समिति बैठक पंजिका | मातृ शिक्षक संघ पंजिका | अभिभावक शिक्षक संघ पंजिका | शिक्षण अधिगम सामग्री पंजिका | स्टॉक पंजिका, निःशुल्क पुस्तक वितरण पंजिका | निःशुल्क गणवेश वितरण पंजिका |
| बाल गणना/परिवार सर्वेक्षण पंजिका | बालकों के जन्मदिन की पंजिका | स्वास्थ्य परीक्षण पंजिका | छात्रवृत्ति वितरण पंजिका | अनुश्रवण/ निरीक्षण पंजिका, शिक्षक डायरी, बुक—बैंक पंजिका | एम0डी0एम0 कनवर्जन कॉस्ट एवं खाद्य पंजिका |
| कोटेशन रख—रखाव पंजिका | टेण्डर प्रक्रिया सम्बन्धी पंजिका | आवागमन पंजिका | आदेश पंजिका | एम0डी0एम0 वितरण पंजिका | |

- आपदा प्रबन्धन।

- प्रभावपूर्ण विद्यालय प्रबन्धन के सिद्धान्त— प्रजातान्त्रिक प्रबन्ध, आंकड़ों का वैज्ञानिक संग्रहण, लक्ष्य निर्धारण तथा योजना, आवधिक निरीक्षण, लचीलापन आदि
- विद्यालय प्रबन्धन में विभिन्न अभिकर्मियों की भूमिका—
 - ◆ प्रधानाध्यापक, शिक्षक एवं बच्चों (बाल सरकार) की भूमिका।
 - ◆ समुदाय, अभिभावक (ग्राम शिक्षा समिति, शिक्षक अभिभावक संघ, मातृशिक्षक संघ, मीना मंच) की भूमिका।
 - ◆ पर्यवेक्षण तंत्र की भूमिका—(ब्लॉक संसाधन केन्द्र के समन्वयक, न्याय पंचायत संसाधन केन्द्र के प्रभारी, खण्ड शिक्षा अधिकारी, डायट मेन्टर, जिला समन्वयक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं उच्च अधिकारियों की भूमिका)।

(ब). प्रारम्भिक शिक्षा के विकास में संलग्न विभिन्न अभिकरण एवं उनकी भूमिका

(I) राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण —

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT)
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE)
- राष्ट्रीय शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (NUEPA)
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU)
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS)

(II) राज्य स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण —

- राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
- राज्य हिन्दी संस्थान
- मनोविज्ञानशाला
- परीक्षा नियामक प्राधिकारी आदि

(III) जिला स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण —

- जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान
- जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आदि

(IV) स्थानीय स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण —

- खण्ड शिक्षा अधिकारी
- एन0पी0आर0सी0

(स). प्राथमिक शिक्षा का आधारभूत ढाँचा

उदाहरण —

- बेसिक शिक्षा परिषद का गठन एवं कार्य
- बेसिक शिक्षा अधिनियम 1972
- बेसिक अध्यापक शिक्षा सेवा नियमावली
- टी0ई0टी0 नियमावली
- सूचना का अधिकार अधिनियम—2005 के सामान्य नियम व प्रावधान तथा विद्यालय स्तर पर दी जाने वाली सूचनाओं की जानकारी।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- प्रशिक्षुओं द्वारा प्राथमिक शिक्षा पर कार्य करने वाले विभिन्न अभिकरणों में से प्रत्येक स्तर पर कार्य करने वाले एक-एक अभिकरण पर अध्ययन कर विस्तृत आख्या या रिपोर्ट तैयार करना।
- विद्यालय प्रबन्धन के अंगों पर मॉडल तैयार करना।
- विद्यालय की विकास योजना तथा उसके शैक्षिक एवं वित्तीय उपाशय पर प्रोजेक्ट तैयार करना।
- कक्षा प्रबन्धन के अंगों एवं योजना पर मॉडल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार की विद्यालयीय समितियाँ एवं उनके कार्यों व दायित्वों पर चार्ट/मॉडल तैयार करना।

www.dietmathura.org

विज्ञान

उद्देश्य

- वैज्ञानिक सोच, क्या, क्यों, कैसे,..... को विकसित करना। रू रू
- विज्ञान की विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- प्रशिक्षु को विषयवस्तु परिवेश में उपलब्ध संसाधनों/सामग्रियों के माध्यम से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को दैनिक जीवन की गतिविधियों, घटनाओं के माध्यम से वैज्ञानिक संकल्पनाओं को प्रस्तुत करने में सक्षम बनाना।
- विज्ञान की विषयवस्तु को रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित टी0एल0एम0/प्रयोग तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/प्रयोगों के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई0सी0टी0) के माध्यम से कठिन संकल्पनाओं को सरल तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षु को प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को विज्ञान की विभिन्न विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना।
- विज्ञान शिक्षण में विभिन्न प्रकरणों की वैज्ञानिक विधियों (पैडागॉजी) को अपनाये जाने का कौशल विकसित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर सभी प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण, शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए, साथ ही उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग विधि सीख सके।

नोट-विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित विषयवस्तु के कक्षा-शिक्षण से पूर्व एवं पश्चात् विभिन्न शिक्षण विधाओं जैसे-प्रयोग विधि, प्रयोग-प्रदर्शन विधि, परिवेशीय भ्रमण विधि, प्रेक्षण विधि, सूक्ष्मावलोकन, वर्गीकरण, विचार-विमर्श, समस्या-समाधान विधि, अन्वेषणात्मक विधि, संग्रह-विधि, समूह-चर्चा विधि एवं प्रश्नोत्तर-विधि पर व्यापक चर्चा की जाए।

सामान्य विषय-4

विज्ञान

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- जैव विकास, पारिस्थितिकीय तंत्र व उसके घटक (जैविक व अजैविक घटक), जैविक घटकों में खाद्य-शृंखला, खाद्य जाल, पारिस्थितिकीय पिरामिड।
- खनिज एवं धातु :अयस्क, धातु का निष्कर्षण, धातु तथा अधातु में अन्तर।
- आवर्तसारिणी की सामान्य जानकारी-विद्युत ऋणात्मकता।
- स्थिर विद्युत आवेश-प्रकार, आवेश के सुचालक व कुचालक।
 - विद्युत धारा व इसके उपयोग।
 - चुम्बकत्व-चुम्बक के गुण, उपयोग, पृथ्वी का चुम्बकीय व्यवहार, विद्युत चुम्बक।
- रक्त की संरचना, रक्त वर्ग, रक्त बैंक, रक्त के आदान-प्रदान में सावधानियां।
- रक्त पीड़ित सामान्य रोगों की जानकारियां।
- एड्स व हेपेटाइटिस-बी की सामान्य जानकारी, कारण लक्षण व बचाव के उपायों से अवगत कराना।
- सुरक्षा एवं प्राथमिक उपचार।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: विज्ञान के प्रत्येक पाठ से प्रशिक्षु शिक्षकों को उस पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिये एक प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- ऐमीटर तथा वोल्टमीटर का अन्तर स्पष्ट करने हेतु मॉडल/प्रयोग तैयार करें।
- ओम के नियम तथा प्रतिरोध मापन पर प्रयोग करें।
- प्याज की झिल्ली की स्लाइड्स बनाकर सूक्ष्मदर्शी के माध्यम से अध्ययन कर रिपोर्ट तैयार करें।
- परिवेश में जाकर खाद्य-शृंखला एवं खाद्य जाल पर अध्ययन कर चार्ट/मॉडल तैयार करें।
- विद्युत आकर्षण एवं प्रतिकर्षण का प्रयोग-प्रदर्शन हेतु मॉडल तैयार करें।
- विद्युत उपकरणों के माध्यम से चित्र या कोई आकृति बनायें।
- पदार्थों/विद्युत के चुम्बकीय गुण को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/प्रोजेक्ट/चार्ट/टी0एल0एम0 तैयार करें।
- रक्त की संरचना एवं प्रकार को स्पष्ट करने हेतु चार्ट/मॉडल/सामग्री/टी0एल0एम0 तैयार करें।

गणित

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को गणित में प्रयुक्त होने वाले गणितीय शब्दों, गणितीय संक्रियाओं तथा चिह्नों के मध्य सम्बन्धों की समझ विकसित करना।
- गणित की विषयवस्तु की जानकारी एवं उसकी अवधारणा की समझ विकसित करना।
- गणित की विषयवस्तु को परिवेश में उपलब्ध संसाधनों/सामग्रियों/बच्चों की गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- गणित की विषयवस्तु की उपयोगिता और आवश्यकता को रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित टी0एल0एम0/गतिविधि/कम्प्यूटर गेम/पज़ल तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/गतिविधि के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- गणित की विषयवस्तु के शिक्षण में प्रयुक्त गणित सीखने-सिखाने के विज्ञान (Pedagogy) एवं गणित शिक्षण के सैद्धान्तिक पक्ष (Methodology) से परिचित कराना।
- गणित सीखने-सिखाने के क्रम (ELPs) की प्रशिक्षुओं में समझ विकसित करते हुए उसकी उपयोगिता एवं प्रासंगिता स्पष्ट करना।
- गणित शिक्षण में शैक्षिक तकनीक की उपयोगिता स्पष्ट करते हुए उसके उपयोग में दक्ष करना।
- कम्प्यूटर के माध्यम से गणित की क्रियाओं को करने में प्रशिक्षु को प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को गणित की विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन करने हेतु प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-4

गणित

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- करणी, करणीगत राशि, करणी चिन्ह तथा करणी का घातांक।
- वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, की अवधारणा।
- किसी संख्या का वर्गमूल तथा दशमलव संख्या का वर्गमूल ज्ञात करना।
- पूर्ण घन संख्याओं तथा पूर्ण घन दशमलव संख्याओं का घनमूल।
- किसी सिक्के के उछालने पर चित या पट के ऊपर पड़ने की सम्भावना का सम्बोध।
- किसी पासे को उछालने पर किसी एक फलक के ऊपर आने की संभावना।
- दो या तीन सिक्कों को एक साथ फेंकने का प्रयोग।
- दो पासों को एक साथ फेंकने का प्रयोग।
- सम्भावनाओं का दैनिक जीवन से सम्बन्ध।
- अवर्गीकृत आँकड़ों की माधिका एवं बहुलक की गणना।
- त्रिकोणमितीय अनुपातों की अवधारणा तथा 0° , 30° , 45° , 60° तथा 90° के कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात ज्ञात करना।
- लम्बवृत्तीय बेलन तथा लम्बवृत्तीय शंकु की अवधारणा तथा इनका आयतन एवं सम्पूर्ण पृष्ठ।
- वर्ग समीकरण, $x^2=k$ के रूप वाले समीकरण का हल। $ax^2+bx+c=0$ का हल (गुणनखण्ड विधि से)
- दो अज्ञात राशि वाले रेखीय समीकरण (युगपत् समीकरण)
- समलम्ब का क्षेत्रफल
- वृत्त की परिधि एवं व्यास में सम्बन्ध
- वृत्त का क्षेत्रफल
- चतुर्भुज का अर्थ, इसके विकर्ण, संलग्न भुजाएं सम्मुख भुजायें, सम्मुख तथा बाह्य कोणों का बोध
- चतुर्भुज के प्रकार-वर्ग, आयत, समचतुर्भुज, सामान्तर चतुर्भुज एवं समलम्ब। इनके प्रगुणों का प्रयोगिक सत्यापन।
- चक्रीय चतुर्भुज तथा चक्रीय बिन्दु की अवधारणा।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को गणित के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- करणी, करणीगत राशि, करणी चिन्ह तथा करणी के घातांक को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
- वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।

- किसी संख्या का वर्गमूल तथा दशमलव संख्या का वर्गमूल ज्ञात करने हेतु मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
- पूर्ण घन संख्याओं तथा पूर्ण घन दशमलव संख्याओं के घनमूल को ज्ञात करने हेतु मॉडल/सामग्री विकसित करना।
- किसी सिक्के के उछालने पर चित या पट के ऊपर पड़ने की सम्भावना को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/सामग्री बनाना।
- पासा (dice) के खेल के माध्यम से प्रायिकता स्पष्ट करने हेतु खेल तैयार करना।
- अवर्गीकृत आँकड़ों की माध्यिका, बारम्बारता एवं बहुलक की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
- बेलन, शंकु, पिरामिड के गुणों को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
- चतुर्भुज, आयत, समचतुर्भुज, समलम्ब, के विभेदों एवं गुणों को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/सामग्री निर्मित करना।

सामाजिक अध्ययन

उद्देश्य

- प्रशिक्षुओं में सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु की संज्ञानात्मक समझ विकसित करना एवं विषयवस्तु की समीक्षा एवं समालोचना करने में सक्षम बनाना।
- प्रासंगिक स्थानीय स्मारकों/संग्रहालयों/पर्यटन स्थल आदि को, विषयवस्तु को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाना।
- सामाजिक अध्ययन में शिक्षण की विधाओं, संचार माध्यमों का प्रयोग एवं मूल्यांकन की विधियों से परिचित होकर कक्षा-शिक्षण में उनके उपयोग हेतु सक्षम बनाना।
- प्रशिक्षु को दैनिक जीवन की गतिविधियों, घटनाओं के माध्यम से सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में सक्षम बनाना।
- सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु को चार्ट/मानचित्र/सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई0सी0टी0) के माध्यम से रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित सामग्रियाँ/मॉडल तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/प्रयोगों के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को सामाजिक अध्ययन की विभिन्न विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना।
- सामाजिक अध्ययन के विषयवस्तु को शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों जैसे अभिनय, समूह-चर्चा, पैनल-चर्चा, वाद-विवाद, समस्या समाधान, भ्रमण, प्रोजेक्ट विधि आदि के उपयोग हेतु सक्षम बनाना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-4

सामाजिक अध्ययन

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम तथा स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु प्रयास।
- धार्मिक तथा समाज सुधार आन्दोलन-ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी, मुस्लिम धार्मिक आंदोलन (सर सैय्यद अहमद खॉ)।
- भारत का राष्ट्रीय आंदोलन-इंडियन नेशनल कांग्रेस का जन्म, बंगभंग, रौलट एक्ट, जलियाँवाला बाग हत्याकांड, खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन, चौरी-चौरा काण्ड, काकोरी काण्ड, स्वराज्य दल, साइमन कमीशन, बारदौली सत्याग्रह, नेहरू रिपोर्ट।
- पूर्ण स्वतंत्रता की मांग-जिन्ना की चौदह शर्तें, सविनय अवज्ञा आंदोलन, प्रथम गोलमेज सम्मेलन, गांधी इरविन समझौता, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, पूना पैक्ट, भारत छोड़ो आन्दोलन तथा स्वतंत्रता की प्राप्ति।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख उदार एवं उग्र राष्ट्रवादी नेताओं का योगदान-महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, गोपाल कृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, सुभाष चन्द्र बोस, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय।
- जलवायु एवं मौसम में अन्तर एवं जलवायु को प्रभावित करने वाले तत्व।
- भारत के प्राकृतिक प्रदेश-बनावट, जनजीवन, कृषि, उद्योग-धंधे, प्रमुख राज्य व नगर।
- उत्तर प्रदेश के प्राकृतिक प्रदेश-विस्तार, प्रमुख नगर, जनजीवन, उत्तर प्रदेश की अनुसूचित जातियां एवं जनजातियां।
- उत्तर प्रदेश की खनिज सम्पदा, शक्ति के साधन, कृषि और सिंचाई।
- उत्तर प्रदेश के प्रमुख आयात-निर्यात एवं उसका हमारी अर्थव्यवस्था पर प्रभाव।
- उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत- पुरातात्विक विरासत, कलाएं, मेले व त्यौहार, तीर्थस्थान, विरासत का संरक्षण।
- पर्यावरण प्रदूषण-अर्थ, प्रकार व रोकथाम।
- संयुक्त राष्ट्रसंघ-गठन, अंग, कार्य।
- जनगणना।
- नागरिक सुरक्षा।
- सरकार की विभिन्न जनहित योजनाएं-भारत एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्तमान में चलायी जा रही स्वरोजगार योजनाएं।
- गैर सरकारी संगठन (एन0जी0ओ0)।
- विविधता में एकता, राष्ट्रीय एकता के प्रतीक।
- आतंकवाद, सांप्रदायिकता तथा जातिवाद-अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के संरक्षण हेतु संवैधानिक प्राविधान, भारत के शान्ति प्रयास-गुट निरपेक्षता की नीति, पंचशील के सिद्धान्त, संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम से भारत के शांति प्रयास।
- भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रमुख चुनौतियां :-

- गरीबी—जनसंख्या वृद्धि—जनसंख्या का घनत्व, माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त, जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक विकास में बाधक, भारत में जनांकिकीय प्रवृत्तियाँ, जन्म एवं मृत्यु दर, लिंग अनुपात, भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति।
- भारत में गरीबी के कारण, भारत में गरीबी रेखा, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम।
- बेरोजगारी—प्रकार, बेरोजगारी उन्मूलन पर वर्तमान में सरकार द्वारा संचालित योजनाएं।
- साक्षरता दर
- भारत में खाद्य सुरक्षा एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली :- खाद्य सुरक्षा की समस्या, सार्वजनिक वितरण प्रणाली का उद्देश्य व प्रसार, भारतीय खाद्य निगम, लक्षित सार्वजनिक वितरण योजना, एकीकृत बाल विकास योजनाएं (आई0सी0डी0एस0) दोपहर भोजन व्यवस्था (एम0डी0एम0), राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विधेयक।
- भूमण्डलीकरण तथा सांख्यिकी—परिचय, आंकड़ों का प्रदर्शन व महत्व, समान्तर माध्य, माध्यिका, बहुलक।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को सामाजिक अध्ययन के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व व पश्चात् महिलाओं की स्थिति के तुलनात्मक अध्ययन पर प्रोजेक्ट बनाएँ।
- उत्तर प्रदेश के मानचित्र में—खनिज, शक्ति के साधन, प्रमुख फसलों को मानचित्र/चार्ट पर प्रदर्शित करें।
- संयुक्त राष्ट्र संघ, उसके अंगों व कार्यों को दर्शाता एक चार्ट तैयार करें।
- भारत में विगत दस वर्षों में होने वाली जनसंख्या वृद्धि के आंकड़ों का सांख्यिकी चित्रों द्वारा निर्माण करें।
- भारतीय इतिहास में स्त्रियों के योगदान (प्राचीन मध्य व आधुनिक काल में) पर एक प्रोजेक्ट तैयार करें।
- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर केन्द्रित एक फोटो एलबम तैयार करें।
- उत्तर प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े प्रमुख स्थलों तथा घटनाओं पर एक रिपोर्ट तैयार करें।
- प्रमुख आयात—निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का एलबम तैयार करें।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के 10 सदस्य देशों के राष्ट्रीय ध्वजों को चार्ट पर बनायें।
- समाचार पत्रों से सामयिक विषयों से संबंधित सूचनाओं का संकलन कर एक कोलाज बनायें।
- अपने आस—पास के 20 परिवारों की साक्षरता दर पर एक प्रोजेक्ट तैयार करें।
- अपने घर से 100 मीटर की परिधि में आने वाले परिवारों की जनगणना करें व लिंग अनुपात भी अंकित कर रिपोर्ट तैयार करें।

हिन्दी

उद्देश्य

- मनुष्य के जीवन में भाषा की भूमिका को समझाना।
- प्रशिक्षुओं को बच्चों के भाषा सीखने की प्रक्रिया से अवगत कराना एवं इस प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट करना।
- विषयवस्तु से सम्बन्धित शिक्षण-सामग्री तैयार करने के लिए प्रशिक्षित करना। हिन्दी भाषा की विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- हिन्दी भाषा की विषयवस्तु में प्रयोग की गयी सामग्री को बच्चों द्वारा परिवेश से एकत्रित कराने एवं दिये गये भावों को बच्चों से प्रस्तुत कराकर उनकी विषय-वस्तु में रुचि उत्पन्न कराने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को बच्चों को पढ़ने, लिखने एवं समझने के लिए प्रेरित करने हेतु कहानियाँ/ कविता बनाने एवं प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को संचार प्रौद्योगिकी एवं अन्य शिक्षण विधाओं के माध्यम से बच्चों के पठन कौशल विकास (शुद्ध उच्चारण) के लिए प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को भाषा शिक्षण का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कराने में प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण, शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। कक्षा में कहानी का उपयोग सिखायें। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए, साथ ही उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, बताया जाए। यथासम्भव सूचना तकनीक/कम्प्यूटर के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग विधि सीख सके।

सामान्य विषय-4

हिन्दी

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- अनिवार्य संस्कृत में अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग आदि का ध्यान रखते हुए शुद्ध उच्चारण, वाचन एवं लेखन।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को समझकर पढ़ना।
- दिये गये अनुच्छेदों के शीर्षक लिखना।
- उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित कविता, निबन्ध, कहानी, एकांकी, यात्रावृतान्त, जीवनी, आत्मकथा, पत्रलेखन, नाटक के लेखकों का सामान्य परिचय, उनका अध्ययन व अध्यापन कार्य।
- अनिवार्य संस्कृत के पाठों का अध्यापन। नीति, श्लोकों को कंठस्थ कराना।
- संस्कृत के शब्द भंडार में वृद्धि हेतु कठिन शब्दों को चुनना, संकलन करना और वाक्य प्रयोग कराना।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को हिन्दी के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, जानकारी एवं घटनाओं के अन्तः सम्बन्धों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, दृश्य-श्रव्य(वीडियो/आडियो), सामग्री, प्रयोग तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- प्रोजेक्ट कार्य के अन्तर्गत, देखे गये मेले, त्योहार पर्व, घटनाओं, यात्रा वर्णन आदि को प्रस्तुत करना (पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण करना)।
- हिन्दी की किसी एक विद्या गद्य, पद्य, नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास पर प्रोजेक्ट वर्क करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर के किसी एक पाठ का संस्कृत से हिन्दी अनुवाद करना।
- निबन्ध – कहानी की विशेषताओं को स्पष्ट करने हेतु चार्ट/सामग्री का निर्माण करना।
- जीवनी एवं आत्मकथा के मूलभूत अन्तर स्पष्ट करने हेतु सामग्री तैयार करना।

अंग्रेजी

Objectives

The goal of this course is to build confidence in Trainee-teachers to use the Language freely and develop strategies for young learners based on pedagogic principles.

Trainee-teachers:

- To enable trainee teacher to understand composition, nature and classroom transaction of English language.
- To enable trainee teacher to understand subject content of English language.
- To make trainee teacher able to prepare TLM for teaching various components of content of English.
- To train trainee teacher to present content material in an interesting way and use of ICT.
- To make trainee teacher able to teach the content through various educational softwares/language games/applications.
- To train trainee teacher on CCE of English language learning and pronunciation.

प्रशिक्षण प्रक्रिया / विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-4

अंग्रेजी

1. Theoretical aspects

- Different approaches and methods of teaching English
 - Grammar translation method.
 - Direct method.
 - Structural approach cum situational technique.
 - Communicative approach.
 - Listening with comprehensions- Public announcements, T.V. News etc

2. Content specification

- Grammar
 - Complex and compound sentences
 - Commands and requests
- Tenses : Present, Past & Future
 - Indefinite
 - Continuous
 - Perfect
 - Perfect continuous
- Grammar:
 - Preposition
 - Conjunction
- Writing
 - Description of Pictures or objects.
 - Letter, Applications.
 - Filling up the forms.
- Lesson planning

3. Sessional work/ Project work

- Viva-voce.
- Preparation of TLM.
- Collection of Language games and tongue twisters.
- Essay writing, Comprehension and Unseen passage.
- On the spot project: Take one News headline with details, an English daily and give each student a fixed time (10 min.) and ask them to find out the following details :
 - Determiners- article, possessive, demonstrative, distributive
 - Pronoun, verb, adjective, adverb & its kind
 - Preposition, Conjunction, Tense, Idioms & phrases and their use.
- Project on the Picture story preparation: Students will prepare exercises based on their picture story (Each student should be given a separate story to maintain the originality of work).
- Role play.

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

उद्देश्य

- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत समाहित विषयों के महत्व से अवगत होकर बच्चों को उनमें दक्ष बनाने में सक्षम करना।
- समस्त विषयों के शिक्षण द्वारा बच्चों में कलात्मक प्रवृत्ति, श्रम का बोध, आत्मनिर्भरता, हस्तकौशल, अनुशासन, समय का सदुपयोग जैसे गुणों का विकास करेंगे।
- विभिन्न प्रकार के समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों के द्वारा प्रशिक्षुओं में शैक्षिक गुणों का विकास।
- प्रशिक्षुओं में रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं को स्थानीय संसाधनों, अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग कर समाजोपयोगी वस्तुएँ तैयार करना।
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत समाहित विषयों के महत्व से अवगत होकर बच्चों को उनमें दक्ष बनाने में सक्षम करना।
- सम्बन्धित विषयों के शिक्षण द्वारा बच्चों में कलात्मक प्रवृत्ति, श्रम का बोध, आत्मनिर्भरता, हस्तकौशल, अनुशासन, सेवाभाव, समय के सदुपयोग जैसे गुणों का विकास करना।
- प्रशिक्षुओं में रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं में स्वरोजगार सम्बन्धी कौशल विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं को स्थानीय संसाधनों, अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग कर समाजोपयोगी वस्तुएँ तैयार करने के कौशल को विकसित करना।

नोट—समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत 'ए' गृहशिल्प एवं 'बी' कृषि व अद्यान विज्ञान' की विषय सामग्री दी गयी है। प्रशिक्षु स्वेच्छा से अपनी सुविधानुसार किसी एक ग्रुप का चयन कर सकते हैं।

प्रशिक्षण प्रक्रिया / विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-1, 2, 3 व 4

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- गृहशिल्प का अर्थ, आवश्यकता, महत्व तथा क्षेत्र।
- विभिन्न प्रकार का कपड़ा व ऊन खरीदते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- पाक कला करते समय ध्यान देने योग्य बातें एवं उनकी सावधानियाँ।
- भोजन परोसते समय ध्यान देने योग्य बातें तथा भोजन परोसना एक कला।
- सिलाई के प्रमुख टाकों का ज्ञान तथा कपड़ों पर उनका प्रयोग।
- सिलाई उपकरण एवं उनका उचित प्रयोग।
- सिलाई एवं कढ़ाई में अन्तर।
- बुनाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की धुलाई, सफाई, प्रेस सम्बन्धित ज्ञान।
- गृह प्रबन्ध से संबंधित ज्ञान।
- मिट्टी की पहचान, वर्गीकरण, कटाव, कटाव की रोकथाम।
- खाद तथा उर्वरकों का महत्व, तुलनात्मक अध्ययन, खाद तथा उर्वरकों का फसलों में प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार की खादों यथा-गोबर की खाद, कम्पोस्ट व हरी खाद तथा जैविक खाद की तैयारी व प्रयोग।
- नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटैशियम उर्वरकों का अध्ययन व फसलों में प्रयोग।
- सिंचाई के लिए नालियाँ बनाना, अधिक व कम सिंचाई से होने वाली हानियाँ।
- जुताई के यंत्र यथा- देशी, मेस्टन व केयर हल आदि का तुलनात्मक अध्ययन।
- उद्यान सम्बन्धी यंत्र यथा- हैंडहो, सिकेटियर, कलम, पैबद व चाकू का उपयोग।
- उद्यान विज्ञान एवं उसका महत्व, भोजन में फल तथा सब्जियों की उपयोगिता।
- कृषि व उद्यान विषय का मूल्यांकन।

‘ए’ – गृहशिल्प

- गृहशिल्प विषय का अर्थ, आवश्यकता, महत्व व क्षेत्र।
- भोजन की आवश्यकता, पौष्टिक तत्व तथा उसकी प्राप्ति के स्रोत तथा इनकी कमी से होने वाले रोग।
- संतुलित आहार-कुपोषण, कारण एवं निवारण।
- पाक कला-भोजन बनाते एवं परोसते समय ध्यान देने योग्य बातें व सावधानियाँ।
- गर्भवती स्त्री एवं नवजात शिशु की देखभाल, टीकाकरण।
- सिलाई एवं बुनाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- विभिन्न प्रकार के कपड़े व ऊन खरीदते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- सिलाई के प्रमुख उपकरण एवं प्रमुख टाकों का ज्ञान तथा कपड़ों पर उनका प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की धुलाई, प्रेस एवं रख-रखाव से सम्बन्धित ज्ञान।
- अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी एवं कलात्मक वस्तुएँ बनाना।

‘बी’ – कृषि

- मिट्टी की पहचान, वर्गीकरण, कटाव, कटाव की रोकथाम।
- खाद तथा उर्वरकों का महत्व, तुलनात्मक अध्ययन, खाद तथा उर्वरकों का फसलों में प्रयोग।

- विभिन्न प्रकार की खादों यथा – गोबर की खाद, कम्पोस्ट व हरी खाद तथा जैविक खाद की तैयारी।
- नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटैश उर्वरकों का अध्ययन व फसलों में प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों की जानकारी एवं प्रयोग।
- सिंचाई के लिए नालियाँ बनाना, अधिक व कम सिंचाई से होने वाली हानियाँ।
- जुताई के यंत्र यथा – देशी, मेस्टन व केयर हल आदि का तुलनात्मक अध्ययन।
- उद्यान सम्बन्धी यंत्र यथा – हैंडहो, सिकेटियर, कलम, पैबंद व चाकू का उपयोग।
- उद्यान विज्ञान एवं उसका महत्व, भोजन में फल तथा सब्जियों की उपयोगिता।
- कृषि व उद्यान विषय का मूल्यांकन।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- ड्रापिंग कागज पर करना।
- वस्त्रों की ड्रापिंग, कटिंग, सिलाई व कढ़ाई करना।
 - तकिए का गिलाफ।
 - झबला, बेबीफ्राक
 - कलीदार पेटीकोट।
 - सादा पायजामा
 - रुमाल (विभिन्न प्रकार के टांकों से सजान)
 - मेजपोश
 - काज बनाने का अभ्यास
 - स्वेटर, मोजा, टोपी बनाना।
- विभिन्न प्रकार की बुनाई से नमूने बनाकर एलबम बनाना।
- किसी ड्राईक्लीनर की दुकान पर जाकर पता करें कि कपड़ों की ड्राईक्लीनिंग (सूखी धुलाई) की क्या-क्या विधियाँ हैं।
- धुलाई में प्रयोग आने वाले साधनों का चित्र बनाकर एक फाइल तैयार करें।
- सब्जियों व फूलों के बीजों का चयन कर इनके पौधे की तैयारी करना।
- वृक्षों की पौध तैयार करना।
- गमलों एवं क्यारी में फूलों वाले तथा शोभाकारी पौधे लगाना।
- क्यारी तथा गमलों में लगे पौधे की निराई-गुड़ाई करना।
- गमलों में खाद्य, उर्वरक देना तथा सिंचाई करना।
- फावड़ा से खुदाई तथा खुरपा/खुरपी से निराई करना।
- आपके क्षेत्र में उगने वाले पौधों के देशी तथा वैज्ञानिक नाम लिखकर उन्हें वृक्ष, झाड़ी तथा शाक में विभाजित करें तथा दैनिक जीवन में इस पौधे का उपयोग हम किस रूप में करते हैं। चार्ट बनाकर प्रदर्शित कीजिए।
- कर्षण यन्त्रों की देशी तथा आधुनिक यन्त्रों की सूची तैयार करें एवं नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटैश तत्वों की उपस्थिति वाले उर्वरकों की सूची तैयार कीजिए।

गृहशिल्प

- भोजन के पौष्टिक तत्वों का चार्ट बनाना।
- सब्जियों का सूप, सलाद, अंकुरित अनाज का नाश्ता, आम का पना तागी चार प्रकार के मीठे एवं चार प्रकार के नमकीन व्यंजन बनाना।

- कक्षा-6, 7 व 8 की गृहशिल्प पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन एवं प्रश्न पत्र का निर्माण करना।
- निम्नलिखित वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग व सिलाई करना –
 1. रुमाल/मेजपोश
 2. झबला/बेबी फ्रॉक
 3. कलीदार पेटीकोट/सादा पैजामा
- स्वेटर, मोजा एवं टोपी बनाना।
- अनुपयोगी वस्तुओं से कोई दो उपयोगी व कलात्मक वस्तुएँ बनाना।

कृषि

- सब्जियों व फूलों के बीजों का चयन कर इनके पौधे की तैयारी करना।
- वृक्षों की पौध तैयार करना।
- गमलों एवं क्यारी में फूलों वाले तथा शोभाकारी पौधे लगाना।
- क्यारी तथा गमलों में लगे पौधे की निराई-गुड़ाई करना।
- गमलों में खाद्य, उर्वरक, देना तथा सिंचाई करना।
- फावड़ा से खुदाई तथा खुरपा/खुरपी से निराई करना।
- आपके क्षेत्र में उगने वाले पौधों के देशी तथा वैज्ञानिक नामा लिखकर उन्हें वृक्ष, झाड़ी तथा शाक में विभाजित करें तथा दैनिक जीवन में इस पौधे का उपयोग हम किस रूप में करते हैं। चार्ट बनाकर प्रदर्शित कीजिए।
- कर्षण यंत्रों की सूची तैयार करें एवं नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटैश तत्वों की उपस्थिति वाले उर्वरकों की सूची तैयार कीजिए।

शांति शिक्षा एवं सतत् विकास

उद्देश्य

- शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों में शांति के प्रति झुकाव पैदा करना।
- प्रशिक्षुओं के भीतर उन सामाजिक कौशलों और अभिरुचियों का पोषण, जो दूसरों के साथ सामन्जस्यपूर्ण जीवन जीने के लिये आवश्यक है, विकसित करना।
- धर्मनिरपेक्ष संस्कृति का निर्माण एवं तत्संबंधी कर्तव्यबोध से अवगत कराना।
- लोकतांत्रिक संस्कृति के सृजन हेतु प्रशिक्षु को प्रशिक्षित करना।
- राष्ट्रीय अखण्डता का महत्व एवं विकास में भूमिका से अवगत कराना।
- विश्व बन्धुत्व की भावना विकसित करना।
- भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हेतु शांति शिक्षा के तत्वों को समझाना।
- शांतिपूर्ण जीवनशैली हेतु प्रेरित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-4

शांति शिक्षा एवं सतत् विकास

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- शांति शिक्षा की अवधारणा, शांति के लिये शिक्षा की वर्तमान आवश्यकता।
- शान्ति शिक्षा में भारतीय जीवन मूल्य, शान्ति कौशल, शान्ति अभिवृत्तियां।
- व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास (Personality and Social Development), व्यक्तित्व, व्यक्तित्व का स्वरूप, विकास और निर्धारण, आदत एवं स्वभाव (चित्तप्रवृत्ति) (Habits and Temperament), स्व जागरूकता (Self awareness), व्यक्तित्व विकास में वातावरण का प्रभाव। व्यक्तित्व के 5 बड़े गुण (Big Five Personality Traits)-खुलापन (Openness), चैतन्यता (Conscientiousness), बहिर्मुखता (Extraversion), सहमतिजन्यता (Agreeableness), स्नायुविकृति (Neuroticism), व्यक्तित्व की सामाजिकता और शान्ति।
- सहपाठी के आन्तरिक सम्बंधों की समझ एवं आपसी सम्बंधों का विकास- (Devlopment of peer Relationship and Interpersonal understandings)
 - (क) बच्चों के विकास में उसके साथियों की भूमिका (Role of Peers in children's development)
 - (ख) साथी के सम्बंधों की विशेषता (characteristic of Peer Relationship)
 - (ग) सामाजिक बोध (Social cognition)
 - (घ) अक्रामकता (Aggression)
 - (ङ) तकनीकी एवं साथी सम्बंध (Technology and Peer Relationship)
 - (च) साथी सम्बंधों में विविधता एवं सामाजिक बोध (Diversity in Peer Relationships and social cognition)
 - (छ) स्वस्थ साथ-सम्बंधों को बढ़ावा (Promoting Healthy Peer Relationships)।
- चरित्र एवं नैतिक शिक्षा, सामाज अनुकूल विकास, (Character and Moral Education.Pro-Social Development), बच्चों के चरित्र निर्माण में माता-पिता तथा परिवार के सदस्यों का योगदान। इसे अच्छा बनाने में कुशल शिक्षक का महत्व।
- व्यवहारवाद में उद्दीपन एवं अनुक्रिया (Behaviorism Stimuli and Responses), शान्ति के लिए निर्माणकारी व्यवहार के प्रोत्साहन हेतु रणनीति (Strategies for encouraging Productive Behaviours), अवांछित व्यवहार को सकारात्मक तरीके से हतोत्साहित करने की रणनीतियाँ (Strategies for discouraging Undesirable Behaviours in a positive way), सकारात्मक व्यावहारिक हस्तक्षेप और सहयोग (Positive Behaviour Intervention Support)।
- हिंसा क्या है और यह क्या करती है? (a) हिंसा के प्रकार (i) मौखिक (Verbal) (ii) मनोवैज्ञानिक (Psychological) (iii) शारीरिक (Physical) (iv) ढांचागत (Structural) (v) लोकप्रिय संस्कृति में अश्लीलता (Vulgarity in Popular Culture)।
 - (b) हिंसा के मोर्चे (Frontiers of Violence)-(i) जाति (Caste) (ii) लिंग (Gender) (iii) भेदभाव (Discrimination) (iv) भ्रष्टाचार (Corruption) (v) साम्प्रदायिकता (Communalism) (vi) विज्ञापन (Advertisement) (vii) गरीबी (Poverty)
 - (c) हिंसा का खतरा (Perils of Violence)

- (d) मीडिया और हिंसा (Media and Violence)
- (e) विवादों के शांतिपूर्ण हल (Peaceful Resolution of conflicts)
- (f) विवादों के बाद समझौता (Reconciliation after conflicts)
- भारत में शान्ति हेतु दार्शनिक चिन्तन, गाँधी दर्शन और शान्ति।
- तनाव प्रबंधन (Stress Management), आन्तरिक शांति-अष्टांग योग; यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधि।
- शांतिमूल्य, मानवाधिकार और लोकतंत्र, भारत में धार्मिक सहिष्णुता एवं राष्ट्रीय एकता, वैश्वीकरण और शान्ति।
- सतत् विकास (Sustainable Development), सतत विकास का अर्थ एवं आवश्यकता (Meaning and need) पर्यावरण एवं सतत् विकास (Environment and Sustainable Development)।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को शांति शिक्षा एवं सतत् विकास के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- व्यक्तित्व के गुणों:- खुलापन, चैतन्यता, बहिर्मुखता, सहमतिजन्यता, स्नायुविकृति एवं इनके समाजिक महत्व पर पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण /चार्ट तैयार करें।
- मानवीय गुण व्यक्तित्व की सामाजिकता और शान्ति।
- तनाव प्रबंधन, आन्तरिक शांति, अष्टांग योग; यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधि पर मॉडल/प्रोजेक्ट/ पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण /चार्ट तैयार करें।
- शांतिमूल्य, मानवाधिकार पर मॉडल/प्रोजेक्ट/ पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण /चार्ट तैयार करें।
- मीडिया और हिंसा पर प्रोजेक्ट/ पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण /चार्ट तैयार करें।
- हिंसा के कारणों एवं प्रकार पर पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण /चार्ट तैयार करें।
- बच्चों के चरित्र निर्माण में परिवार के सदस्यों का योगदान को पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण /चार्ट पर प्रस्तुत करें।
- पर्यावरण एवं सतत् विकास पर मॉडल/प्रोजेक्ट/प्रस्तुतीकरण/चार्ट तैयार करें।

कला

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को कक्षा-शिक्षण के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- प्रशिक्षु को बच्चों में कला के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रशिक्षण देना।
- कला की विविध विधाओं एवं विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- कला शिक्षा द्वारा आनन्द की अनुभूति कराना।
- कला शिक्षा द्वारा संवेदनशीलता एवं सौन्दर्यबोध की अन्तर्दृष्टि विकसित कराना।
- कला शिक्षा को जीवनचर्या एवं अन्य विषयों के साथ समाहित करने का कौशल विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं में कला शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीयता, मानवता, भावात्मक एकता तथा नैतिकता विकसित करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में कला की विविध विधाओं के प्रति झिझक को समाप्त कर सकें।
- प्रशिक्षु को बच्चों में सृजनशीलता को विकसित करने की गतिविधियाँ/कार्य सिखाना।
- कला का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने का प्रशिक्षण देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-1, 2, 3 व 4

कला

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- दृश्यकला
 - स्वतंत्र भाव प्रकाशन, सौन्दर्यानुभूति, रंगों का ज्ञान, रेखाओं का ज्ञान, आकार-प्रकार का ज्ञान देना।
- हस्तकला
 - अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण, कोलाज निर्माण, मिट्टी के खिलौने बनवाना।
 - चित्रकला के विभिन्न तरीकों एवं सामग्री का प्रयोग जैसे-पोस्टर, कलर, वाटर कलर, पेन्सिल एवं रबड़, पेन एवं स्याही आदि।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को कला के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विद्यालय तथा घर की साज-सज्जा हेतु सामग्री।
- हस्तकला के विभिन्न तरीकों-कोलाज, मिट्टी के सामान, पेपर कटिंग, पेपर फोल्ड, चूड़ियों से विभिन्न सजावटी सामान, वाल हैंगिंग, लिफाफे आदि का निर्माण।
- विभिन्न अवसरों पर चित्रकला, हस्तकला, मेंहदी, रंगोली, अल्पना आदि प्रतियोगिता करना।
- मिट्टी के खिलौने, अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं को बनाना।

शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को स्वास्थ्य शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा के महत्व से अवगत कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न खेल एवं उनके नियमों की जानकारी देना।
- प्रशिक्षु को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में विभिन्न खेलों के प्रति झिझक को समाप्त कर सके।
- विभिन्न खेलों में बच्चों के सतत् मूल्यांकन करने में सक्षम करना।
- खेलकूद के माध्यम से स्वास्थ्य, अनुशासन, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-1, 2, 3 व 4

शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

स्वास्थ्य शिक्षा

- स्वास्थ्य शिक्षा का अर्थ, क्षेत्र एवं उद्देश्य, स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक, बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ, स्वास्थ्य केन्द्रों की भूमिका, बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण और उसका अनुश्रवण, संक्रामक रोग एवं टीकाकरण, पोलियो एवं एड्स जैसी घातक बीमारियों के बचाव हेतु जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम।
- व्यक्तिगत स्वच्छता एवं शिक्षकों द्वारा नियमित निरीक्षण।
- विद्यालयीय स्वच्छता।
- प्राथमिक चिकित्सा एवं विभिन्न दुर्घटनाओं में प्राथमिक चिकित्सा का महत्व।
- रेडक्रॉस: रेडक्रॉस का परिचय एवं उपयोगिता

शारीरिक शिक्षा

- खेल, व्यायाम तथा योग
- शरीर को वॉर्मअप करने वाली क्रियाएं यथा-इधर उधर दौड़ना।
- हाथ-पैर, धड़ का व्यायाम। कौशल के अभ्यास हेतु लम्बी कूद, ऊँची कूद, जिमनास्टिक, मार्चिंग, गेंद एवं रस्सी कूद से सम्बन्धित क्रियाएं।
- विभिन्न प्रकार की दौड़: 10 मी०, 200 मी०, 400मी०, 600मी०, 800मी० की दौड़, रिले दौड़, बाधा दौड़,।
- ध्यान एवं विभिन्न प्रकार के योगसान एवं प्राणायाम यथा-भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी और उद्गीथ तथा उनके लाभ। लेजिम एवं डम्बल द्वारा किये जाने वाले व्यायाम।
- विभिन्न प्रकार के थ्रो: गोला फेंक, चक्का फेंक।
- खेल:
 - कबड्डी, खो-खो, फुटबाल, हॉकी, बॉलीवाल, बैडमिंटन।
 - अमरूद दौड़, छुआ छुआवल, एक टांग पर दौड़, चूहा-बिल्ली, गेंद-तड़ी, छाया-पकड़।
- स्काउटिंग/गाइडिंग
 - स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन बनने सम्बन्धित दक्षताओं हेतु प्रथम एवं द्वितीय सोपान परीक्षा।
 - कब/बुलबुल, बालवीर/वीरबाला प्रवेश एवं विकास क्रम।
 - कब/बुलबुल, प्रथम चरण-कोमल पंख।
 - कब/बुलबुल, द्वितीय चरण-रजत पंख।
 - कब/बुलबुल, तृतीय चरण-स्वर्ण पंख।
 - कब/बुलबुल, चतुर्थ चरण-हीरक पंख।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा

सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- प्रार्थना स्थल पर कराने के लिए नित्य सामुदायिक/राष्ट्रभक्ति गीतों का संकलन तैयार करना।
- शारीरिक व्यायाम एवं योगासनों की तैयारी एवं प्रदर्शन कराना तथा अभिलेखीकरण करना।
- प्रशिक्षु शिक्षक विभिन्न प्रकार के खेलों में से एक खेल का चयन प्रति सेमेस्टर करेगा तथा उस पर अपनी आख्या प्रस्तुत करेगा।
- सार्वजनिक स्थानों यथा—रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, मेलों में श्रमदान (समाज सेवा का कार्य) करना जैसे पानी पिलाना व शांति व्यवस्था बनाये रखना।
- वृक्षारोपण करना, दीवारों पर सद्वक्त्र लिखना तथा जन जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- विभिन्न प्रकार के योगासनों पर चार्ट/मॉडल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्यतियों पर मॉडल/चार्ट आदि तैयार करना।

संगीत

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को लय, गति, यति, आरोह—अवरोह का ज्ञान कराना।
- प्रशिक्षु को बच्चों में संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रशिक्षण देना।
- संगीत की विविध विधाओं एवं विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- संगीत के माध्यम से आनन्द की अनुभूति कराना।
- संगीत शिक्षा द्वारा संवेदनशीलता की अन्तर्दृष्टि विकसित कराना।
- प्रशिक्षुओं में संगीत शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीयता, मानवता, भावात्मक एकता तथा नैतिकता विकसित करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में संगीत की विविध विधाओं के प्रति झिझक को समाप्त कर सकें।
- प्रशिक्षु को बच्चों में गीत/संगीत को विकसित करने की गतिविधियाँ/क्रिया—कलाप सिखाना।
- संगीत का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने का प्रशिक्षण देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग—विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-1, 2, 3 व 4

संगीत

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- संगीत के परिभाषिक शब्द-स्वर, स्वरों के प्रकार, नाद, आरोह, अवरोह, पकड, आलाप, लय, लय के प्रकार आदि का ज्ञान।
- संगीत गायन में सहायक तालों का ज्ञान यथा – तीनताल, झपताल, रूपकताल, कहरवा ताल, दादरा, एकताल व चारताल का परिचयात्मक ज्ञान।
- संगीत-वन्दना, भजन, स्थानीय लोकगीत, ऋतुओं एवं मौसम सम्बन्धी गीत, राष्ट्रीय एकता (देशगान, राष्ट्रगान) सम्बन्धी गीतों का ज्ञान।
- भारतीय संगीतज्ञों का जीवन परिचय।
- त्य/नाटक-लोकनृत्य, स्थानीय नृत्य, भावनृत्य, समसामयिक समस्याओं से, पाठ्यवस्तु से एवं देशभक्ति से सम्बन्धित नाटक करवाना।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को संगीत के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों का संकलन करना।
- विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों का संकलन।
- विभिन्न प्रकार के नृत्यों का एलबम तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के लोकनृत्यों पर चार्ट/मॉडल/वीडियो क्लिप तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के लोकगीतों पर चार्ट/मॉडल/वीडियो/ऑडियो क्लिप तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के वाद् यंत्रों का एलबम तैयार करना।